"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 06, Issue: 06, Nov. – Dec. 2019 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) – 5.266

साहित्य, समाज और सिनेमा : एक अनुशीलन

डॉ. दस्तगीर देशमुख
सहायक अध्यापक एवं शोध-निर्देशक
हिंदी विभाग, लोकसेवा कला व विज्ञान महाविद्यालय,
औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत

प्रस्तावना :-

साहित्य और समाज का संबंध अभिन्न है। समाज के बिना साहित्य सृजन असम्भव है, ठीक उसी प्रकार साहित्य के बिना समाज भी कोई महत्व नहीं रखता । साहित्य एक बहुत बड़ा सशक्त माध्यम है उसी तरह फिल्म भी बहुत प्रभावशाली और सशक्त माध्यम है। दोनों कला के ही दो अलग-अलग स्वरूप है ।साहित्य शब्दों पर आश्रित हैं तो फिल्म दृश्य-श्रव्य माध्यम है। एक साहित्यकार को केवल कागज और कलम की जरुरत होती है, जबकि फिल्म निर्देशक को फिल्म के कला पक्ष के साथ-साथ उसका तकनीकी पक्ष भी देखना पडता है। फिल्म निर्माण की जोखिम भरी प्रक्रिया से उसे गुजरना पडता है।''जो भी हो साहित्य और सिनेमा कला और मनोरंजन जगत के दो महत्वपूर्ण माध्यम है।साहित्यकार और दिग्दर्शक समाज में ही जन्म लेते है, समाज में ही पलते है और समाज की आसपास की परिस्थितियों से प्रभावित होकर, व्यथित होकर अपना-अपना सर्जन करते हैं। साहित्यकारऔर दिग्दर्शक दोनों का धर्म है सामाजिक हितों की रक्षा करना।साहित्य और सिनेमा मेंजीवन उपयोगी उपदेश देने की शक्ति होती है।''

साहित्य की परिभाषा देने का प्रयत्न शताब्दियों से चला आ रहा है।साहित्य के कई विद्वानों ने उसे शब्दों में बाँधने का प्रयास भी किया।मूलत: 'साहित्य' शब्द संस्कृत भाषा का है।'साहित्य' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'सहित' शब्द में यत् प्रत्यय के योग से हुई है।''साहित्य = सहित + यत्, साहित्य का अर्थ है शब्द और अर्थ का यथावत सहभाव अर्थात 'साथ होना'।इस प्रकार सार्थक शब्द मात्र का नाम साहित्य है ।सिनेमा हमेशा से ही सामाजिक परिवर्तन करने में आगे रहा है।यह सच्चाई है कि सिनेमा अपने वास्तविक अर्थो में न केवल गतिशील खिलौने का चित्र है।बल्कि वह जन शिक्षा का बड़ा ही प्रभावशाली माध्यम सिध्द हुआ है।प्रत्येक फिल्म एक कहानी होती है।

साहित्यिक सह-संबंधो के आधार पर सिनेमा की कहानी की कथावस्तु साहित्य की कहानी की कथावस्तु से पूर्णत: मेल खाती है। इसमें भी कथात्मकता पाई जाती है - भूमिका, कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, देशकाल वातावरण, संवाद, रस, अभिनय, भाषा-शैली, उद्देश्य आदि सभी तत्वों के माध्यम से फिल्म की कहानी को नया, आकर्षक एवं प्रभावी बनाया जाता है।साहित्य की विधाओं की भाँति सिनेमा को भी कई भागों में बाँटा जा सकता है – आर्ट फिल्में, टेली फिल्में, चाइल्ड फिल्में, डाक्यूमेंट्री फिल्मे, कमर्शियल फिल्में, वृत्तचित्र, विज्ञापन फिल्में, वार ॲण्ड पीस फिल्में आदि।किसी भी फिल्म की कहानी में साहित्य के छ: प्रमुख तत्वों के अलावा अन्य तत्व भी पाये जाते हैं। इसमें निर्माता, निर्देशक, पटकथालेखक, अभिनय कर्मी, गीतकार, संगीतकार, कोरियोग्राफर, कमेंटेटर, स्टंट मैन, साज-सज्जाकार, आदि व्यक्ति प्रतिभाग करते हैं। सिनेमा में भी नव रस, गुण, ध्वनि, रीति आदि का समावेश होता है । साहित्य की भाँति सिनेमा में भी शृंगार रस 'रसराज' है । लगभग प्रत्येक फिल्म में कम-से-कम एक प्रेम कहानी अवश्य रहती है ।

सिनेमा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक प्रभावशाली एवं सशक्त माध्यम है। ''इसमें कोई दो राय नहीं की सिनेमा सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनैतिक सभी स्थितियों को आत्मसात करते हुए रचनात्मक माध्यम बना है।कहानी, उपन्यास, संस्मरण, नाटक, कविता, रिपोर्ताज, रेखाचित्र सभी को सिनेमा ने एक सशक्त अभिव्यक्ति दी है ।सिनेमा सृजनात्मक और यांत्रिक प्रतिभा का सुन्दर संगम बन बया है।'' कला, विज्ञान और वाणिज्य का त्रिवेणी संगम सिनेमा माध्यम में दिखाई देता है।

सिनेमा की परिभाषा :

सिनेमा का स्वरूप स्पष्ट करने के लिए विविध लेखकों, विद्वानों, सिनेमा के जानकारों ने सिनेमा की जो परिभाषाएँ प्रस्तुत की है उसे देखना होगा ।सिनेमा की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाओं को हम यहाँ प्रस्तुत करेंगे -

फिल्मकार कमलस्वरूप -''सिनेमा अनुभूति और संवेदना, व्यष्टि और समष्टी के सम्बन्ध का विज्ञान है ।विभिन्न नाटय एवं ललित कलाओ का सम्मिश्रण है।किसी घटना के काल और दिक केआयामों का रूपांकन है।''

विजय शर्मा - ''फिल्म साहित्य से अलग एक भिन्न विधा है । यहां कथानक होता है मगर वही सबकुछ नहीं होता है।फिल्म भिन्न मुहावरों में बात करती है।''

आलोक पांडेय - ''दरअसल सिनेमा सिर्फ अभिव्यक्ति नहीं है, वह एक अन्वेषणकारी माध्यम भी है। वह बहुत कुछ ऐसा भी कहता और करता है, जिसे शब्दों में नही कहा जा सकता।''

बसंतकुमार तिवारी - ''सिनेमा एक बड़ा धोखा है । कुछ भी नहीं होकर वह चलचित्रों से दर्शक को इतना आत्मविभोर कर देता है कि कुछ समय के लिए वह अपने अस्तित्व को भी भूल जाता है।''

ब्लादीमिर इल्यीच लेनिन - ''हमारे लिए सिनेमा सभी कलाओं से अधिक महत्वपूर्ण है। सिनेमा न केवल लोगों के मनबहलाव का बल्कि का सामाजिक शिक्षा, संवाद स्थापित करने का तथा हमारी विशाल जनसंख्या को एक सूत्र में बाँध लेने का सशक्त साधन है ।''

लुई बुनुएल -''सिनेमा स्वप्नलोक, मानवीय भावनाओं को उनकी सम्पूर्णता में दिखाने और मानवीय संवेगों को चित्रित करने का सर्वोत्तम माध्यम है ।''

इस प्रकार उपर्युक्त कई विद्वानों द्वारा सिनेमा की अलग अलग परिभाषाएँ प्रस्तुत की गई हैं।जिसमें सिनेमा माध्यम को समझने-समझाने का प्रयास किया गया है ।लेकिन उपर्युक्त किसी भी परिभाषा को परिपूर्ण नहीं कहा जा सकता। ये सभी परिभाषाएँ मिलकर भी सिनेमा के स्वरूप पर पर्याप्त प्रकाश नहीं डालती। लेकिन इतना तो अवश्य है कि इनसे सिनेमा के स्वरूप को समझने में थोडी-बहुत मदद तो मिलती ही है। परंतु इनसे सिनेमा के
स्वरूप को पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता। यदि हमें सिनेमा के स्वरूप को भलिभाँति समझना है तो फिल्मों के प्रकार, सिनेमा के तकनीकी और कला पक्ष को समझना होगा । आगे हम सिनेमा के स्वरूप को और गहराई से समझने का प्रयास करेंगे –

सिनेमा के स्वरूप पर पर्याप्त प्रकाश नहीं डालती । लेकिन इतना तो अवश्य है कि इनसे सिनेमा के स्वरूप को समझने में थोडी-बहुत मदद तो मिलती ही है । परंतु इनसे सिनेमा के स्वरूप को पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता । यदि हमें सिनेमा के स्वरूप को भलिभाँति समझना है तो फिल्मों

के प्रकार, सिनेमा के तकनीकी और कला पक्ष को समझना होगा । आगे हम सिनेमा के स्वरूप को और गहराई से समझने का प्रयास करेंगे ।

फिल्मों के प्रकार -

फिल्में अनेक प्रकार की होती है । फिल्म एक माध्यम है जिसे प्रत्येक फिल्मकार अपनी दृष्टि से उपयोग करता है । उद्देश्य, समयावधि, विषय, स्वरूप आदि के अनुसार फिल्मों के अनेक प्रकार बनते हैं जिसे निम्न प्रकार से देखा जा सकता है ।

फीचर फिल्म -

अंग्रेजी 'फीचर' (Feature) शब्द का हिंदी अर्थ है 'कथाशैली' । फीचर फिल्म उसे कहा जाता है जिसका निर्माण व्यावसायिक लाभ उठाने हेतु किया जाता है । इन फिल्मों का उद्देश्य मात्र मनोरंजन होता है । इस प्रकार के फिल्मों की लागत अधिक होती है । इनमें से अधिक फिल्मों का कथानक कल्पनापरक होता है । कहीं-कहीं यथार्थ घटना पर कल्पना की चादर ओढ़ी जाती है । भारतीय हिंदी फिल्मों का एक ढाँचा होता है, जिसके आधार पर फिल्मों का सृजन होता है । जैसे- कथा, नृत्य-गीत, थ्रीलर दृश्य, प्रेरम त्रिकोण, मारधाड, करुणा आदि । इस प्रकार की फिल्मों के विषय कई बार यथार्थ की कोई भीषण समस्या भी होती है। मूलत: अधिकांश फिल्मों में नायक-नायिकाएँ प्रमुख होती है ।

भारत में पहली फिचर फिल्म दादासाहेब फालके ने सन् १९१३ ई. में 'राजा हरिश्चन्द्र' नाम से बनाई । इस प्रकार की फिल्मों का प्रदर्शन सिर्पâ सिनेमाघरों में होता है। फिल्में बनने के बाद वितरकों के जरिए फिल्मों को बाजार में बेचा जाता है । पाश्चात्य देशों की तुलना में भारतीय फिल्में अधिक भावपूर्ण, संवेदनशील तथा मनोरंजनात्मक होती है। इस प्रकार के फिल्मों की समयावधि ढाई-तीन घण्टे होती है ।

फीचर फिल्म के प्रकार -

फिल्म जॅनर के आधार पर फीचर फिल्मों को कई प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है । जॅनर फिल्मों को अलग अलग वर्गों में रखने और उसके माध्यम से दर्शकों की अभिरूचियों को परखने का एक बेहतर तरीका है। ''फिल्म सिध्दान्तकारों के मुताबिक जॅनर एक पध्दति है, जिसके जरिए फिल्मों के

विषय अथवा उनकी विवरणात्मक शैली में दिखनेवाली समानता के आधार पर उन्हें वर्गिकृत किया जाता है । सिनेमा में यह थ्योरी साहित्य से आयी है ।''१८ अलग अलग जॅनर में फिल्में बनती है । जैसे - एक्शन, अपराध, रहस्य, पे्रम, पारिवारिक, हॉरर, म्युझिकल, थ्रिलर, हास्य, साइंस फिक्शन, युध्द सिनेमा आदि । हिंदी फिचर फिल्म के प्रकार - यहाँ हम हिंदी फीचर फिल्म के कुछ प्रचलित प्रकार निम्न रूप से देखेंगे -

प्रेमप्रधान फिल्में -

हिंदी फिल्मों में 'प्रेम' इस विषय को कई प्रकार से और कई अँगल्स से फिल्माया गया है।मुख्यधारा की कोई भी फिल्म आप देखें उसमें 'प्रेम-कहानी' आपको नजर आएगा। हिंदी फिल्मी दुनिया में पे्रम कथाओं का कोई अंत नहीं है । इस विषय पर हजारों की संख्या में फिल्में बनी है ।आज भी यह सिलसिला जारी है । हिंदी फिल्मों का यह सबसे हिट फाम्र्युला है । प्यार, इश्क, मोहब्बत, आशिकी के इर्द-गिर्द यह फिल्में घूमती है । कहीं प्रेम त्रिकोण तो कहीं लंबी जुदाई दिखाई देती है। प्रेमकथा के संदर्भ में रिचर्ड हॅरिसन कहते है -

"Romance applied to stories, is generally taken to mean that there is a dominant love theme and the dictionary describes is (among several other things) as a love affair an series of facts having this character."

वर्तमान कालिन हिंदी फिल्मों में 'पे्रमप्रधान' कथाओं की भरमार है।प्रेमप्रधान फिल्मों की संख्या बॉलिवूड में हमेशा से ही ज्यादा रही है।

हिंसाप्रधान फिल्में -

बॉलिवुड में आज हिंसाप्रधान फिल्मों की बाढ़ सी आ गई है।आमतौर पर इस तरह की फिल्मों में हिंसा और खून-खराबा दिखाकर डर पैदा किया जाता है। ये फिल्में दर्शकों को चौंकाती है। इन फिल्मों में हिंसा के साथ-साथ सेक्स भी परोसा जाता है।हिंसा और सेक्स का अजीब मिश्रण इन फिल्मों में देखा जा सकता है।

हास्यप्रधान फिल्में -

हास्यप्रधान या कॉमेडी फिल्में भी हिंदी में बड़े पैमाने पर बनती हैं । इन फिल्मों का उद्देश्य दर्शकों का मनोरंजन करना होता है।हास्य प्रधान फिल्में बनाना आसान काम नहीं है। इन फिल्मों में रोजमर्रा की जिंदगी के अनुभव, घटनाओं आदि का सहारा लेकर उसपर व्यंग्य करके हास्य पैदा किया जाता है।छोटी-छोटी घटनाओं तथा प्रसंगो के माध्यम से हास्य निर्माण होता है।फिल्म के चरित्र भी हास्य निर्माण में अपना योगदान करते हैं। कॉमेडी फिल्में दर्शक बहुत पसंद करते हैं।इन फिल्मों के द्वारा होनेवाले हँसी-मजाक,मनोरंजन से वे अपने जीवन की परेशानियों को थोडी देर के लिए क्यों न हो भूल जाते हैं ।

सामाजिक फिल्में -

समाज से जुड़े प्रश्नों पर जिन फिल्मों के माध्यम से भाष्य किया जाता है वे फिल्में सामाजिक फिल्में कहलाती है।आर्थिक शोषण, जातिभेद, धोखेबाजी, सामाजिक प्रताड़ना, सामाजिक विद्वेष, प्रांतवाद, साम्प्रदायिकता, नक्सलवाद, आतंकवाद आदि विषयों को लेकर ये फिल्में बनती हैं। ये फिल्में समाज को आईना दिखाने का काम करती हैं। हिंदी में हर साल इस विषय पर कई फिल्में बनती हैं।

राजनीतिक फिल्में -

राजनीतिक विषयों को लेकर बहुत कम फिल्में हमारे देश में बनती है।हालाँकि हमारा पूरा देश आज राजनीति से पे्ररित है।गल्ली से लेकर दिल्ली तक राजनीति में रूचि रखनेवाले लोग हैं।हमारे जीवन पर राजनीति का गहरा प्रभाव है।इतने बड़े लोकतांत्रिक देश में 'राजनीति' विषय पर इतनी कम मात्रा में फिल्में बनना चिंता का विषय है।खैर, देश की राजनीति, राज्य की राजनीति, राजनेताओं का चरित्र, राजनीति की पैंतरेबाजी आदि विषयों पर राजनीतिक फिल्में बनती हैं।इन फिल्मों को बनाने से पहले फिल्म विषय से संबंधित अनुसंधान भी करना जरूरी होता है। तथ्यों की जाँच-पडताल करनी होती है।हिंदी में इस विषय को लेकर बनीं कुछ उल्लेखनीय फिल्में इस प्रकार है- आँधी, राजनीति, युवा, रंग दे बसंती, चक्रव्युह, सत्याग्रह आदि ।

पारिवारिक फिल्में -

पारिवारिक फिल्मों में परिवार से संबंधित विषय होते हैं। जैसे - परिवार के आपसी संबंध, बिखराव, घुटन, टूटन, अत्याचार, पे्रम, मिलना-बिछुड़ना आदि।भाई-भाई का झगडा, माँ-बाप की भत्र्सना, पती-पत्नी के बीच की तकरार, बाप-बेटे के बीच झगडा, बेटीमाँ- बाप के बीच झगडे आदि विषयों पर ये फिल्में बनती हैं।इन फिल्मों के माध्यम से संस्कृति, परंपरा, धर्म का पालन, आदर्श आदि का पाठ पढाया जाता है। यह देश की एकता, सामाजिक सद्भाव और धार्मिक सहिष्णुता के लिए आवश्यक है ।

डॉक्यूमेंट्री फिल्म -

इसे वृत्तचित्र भी कहा जाता है।इन फिल्मों का उद्देश्य सूचना और शिक्षा देना है। इन फिल्मों में कल्पना के स्थान पर यथार्थ पर बल दिया जाता है।इन फिल्मों का बजट फीचर फिल्म की तुलना में कम होता है।इस प्रकार की फिल्मों का निर्माण सरकारी तथा गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा अनुदान देने से किया जाता है।इस प्रकार की फिल्मों का प्रदर्शन सिनेमाघरों में नहीं होता ।राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में होता है। अधिकांश डॉक्युमेंट्री फिल्में राष्ट्रीय चैनलों पर दिखाई जाती हैं। इन फिल्मों मे 'विचार' तथा 'सूचना' तत्त्व केंद्रबिंदु होता है।सूचना एवं तकनीकी विकास की बदौलत आज अच्छे, यथार्थ, समस्यावाले वृत्तचित्र निर्माण हो रहे हैं।इस तरह की फिल्मों का एक समृध्द इतिहास है और वे हमेशा से लोगों को शिक्षित तथा सूचित करते हुए उनके व्यापक जागरण का लक्ष्य पूरा करती रही हैं।छोटे परदे पर डॉक्यूमेंट्री फिल्में अधिक प्रभावी सिध्द हो रही है।दूरदर्शन के माध्यम से ग्रामीण जनता इन फिल्मों को देखती हैं क्योंकि इन फिल्मों से उन्हे अच्छी जानकारीयाँ मिलती हैं। पर्यावरण तथा जन स्वास्थ के प्रति सजगता पैâलाने में डॉक्यूमेंट्री फिल्मों का महत्वपूर्ण योगदान हैं । डॉक्यूमेंट्री, फिल्म के अनेक प्रकार है । जैसे - सूचनात्मक डॉक्यूमेंट्री, कहानी डॉक्यूमेंट्री, यात्रापरक डॉक्यूमेंट्री, सामाजिक डॉक्यूमेंट्री, शोधपरक डॉक्यूमेंट्री, ऐतिहासिक डॉक्यूमेंट्रि आदि ।

टेलीफिल्म -

टेलीफिल्म का निर्माण सिर्पâ टेलिविजन के लिए किया जाता है।टेलीफिल्म तथा फिचर फिल्म में काफी मात्रा में समानता होती है।जैसे - कथानक, पात्र, मारधाड, संघर्ष, संगीत आदि । इन फिल्मों को

बनाने के लिए फिचर फिल्म की तुलना में कम लागत आती है।टेलीफिल्मों की शुरुआत ही इस उद्देश्य से हुई है कि विकास संबंधी अभियानों को बढ़ावा मिलें। इस कारण अधिकतर टेलीफिल्म के विषय विकास संबंधी रहे है और उनमें भी ग्रामीण विकास संबंधी विषय बड़ी मात्रा में लिए जाते हैं, क्योंकि भारत की करीबन सत्तर प्रतिशत जनसंख्या देहातों में रहती है । टेलीफिल्मों के माध्यम से जन स्वास्थ, जलसंरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, बालविकास, आवास निर्माण, ग्रामोद्योग, सफाई आदि तमाम विषयों पर समय - समय पर देहाती जनता को प्रेरित किया जाता है।

एनिमेशन (गतिकला) और कार्टून फिल्म -

एनिमेशन और कार्टुन फिल्मों का निर्माण विशेष रूप से बच्चों को ध्यान में रखकर किया जाता है। इन फिल्मों को बनाने में आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जाता है।काल्पनिक कथाएँ, दंतकथाएँ, पुराण, प्राचीन घटनाएँ आदि का सहारा लेकर कार्टून फिल्में बनाई जाती है । इस प्रकार की फिल्में देखने में बच्चे-बूढे भी रुचि रखते है । इन फिल्मों का प्रदर्शन टेलिविजन तथा सिनेमाघरों में भी होता है । आजकल हिंदी में एनिमेशन और कार्टून फिल्मों ने धूम मचाई हैं ।बच्चों पर इन फिल्मों का जबरदस्त सम्मोहन आज देखा जा सकता है ।

विज्ञापन फिल्म -

व्यावसायिक लाभ हेतु किसी दुकान, व्यापारी प्रतिष्ठाण, कम्पनी द्वारा अपना उत्पाद तथा सेवा बेचने हेतु बनाई जानेवाली फिल्म 'विज्ञापन फिल्म' कहलाती है । ग्राहकों को अपने उत्पाद की जानकारी देने हेतु सुप्रसिध्द फिल्म नायक - नायिकाओं को लेकर इन फिल्मों को बनाया जाता है ताकि ग्राहक उनको देखकर उस वस्तु के प्रति आकर्षित हो सके । विज्ञापन फिल्मों का प्रदर्शन टी.वी. चैनलों तथा सिनेमाघरों में फिचर फिल्म के मध्यांतर में किया जाता है ।विज्ञापन फिल्मों ने आज अपना अलग अस्तित्व बनाया है। जिसके कारण ग्राहक तथा उत्पादक दोनों को फायदा होता है।

साहित्य और सिनेमा भले ही भिन्न माध्यम हो लेकिन दोनों के वेंâद्र में 'समाज' ही है। समाज की समस्याएँ है, समाज के प्रश्न है । सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव ग्रहण करते हुए इन दोनों माध्यमों ने समय समय पर इसपर टिप्पणी की है। आम आदमी के दर्द को

अभिव्यक्ति दी है और समाज की कुछ अनसुलझी समस्याओं का समाधान अपने माध्यम से करने का प्रयास भी किया है । भले ही कभी-कभी इनका तरीका कानूनन नहीं है, लेकिन समस्या का काल्पनिक समाधान पाकर थोड़ी देर के लिए क्यों न हो लोग आत्मिक आनंद का अनुभव करते हैं, यह भी कुछ कम नहीं है । कई बार साहित्य और सिनेमा से पे्ररणा पाकर लोगों ने व्यवस्था के खिलाफ आंदोलन भी किए हैं, इतिहास इस बात का गवाह है । साहित्य और सिनेमा की ताकत बहुत बड़ी है । समाज में इन दोनों माध्यमों का महत्व बहुत ज्यादा है।साहित्य, सिनेमा और समाज एक दूसरे से अभिन्न रूप में जुड़े है। साथ ही परस्पर पूरक भी है । समय समय पर एक दूसरे को प्रभावित करते है और प्रभावित भी होते है । साहित्य और सिनेमा ने समाज और राष्ट्र निर्माण में अपना अपना अनमोल योगदान दिया है । समाज का मार्गदर्शन किया है । इससे हमें इन दोनों माध्यमों की महत्ता का पता चलता है।

संदर्भ सूची :

१) साहित्य और समाज - सम्पा. प्रा. मुकेशकुमार कांजिया, पृ. ३२

२) हिंदी साहित्य कोश - सम्पा. धीरेन्द्र वर्मा,

३) साहित्यिक निबंध - गणपतिचन्द्र गुप्त, पृ. ०१

४) भारतीय हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा - डॉ. देवेन्द्र नाथ सिंह - डॉ. वीरेंद्र सिंह यादव

५) हिंदी साहित्य और सिनेमा - विवेक दुबे